परमेश्वर का नाम क्या है?

अंग्रेज़ी के ''god'' शब्द का अर्थ है आराधना की वस्तु। इसके अक्षरों को बड़ा कर देने पर इसका अर्थ एक ही सच्चा और जीवता परमेश्वर बन जाता है। और भी हैं जिन्हें लोग ईश्वर या देवते कहते हैं, परन्तु ''हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए हैं'' (1 कुरिन्थियों 8:5, 6)। स्वर्गीय पिता ने अपना व्यक्तिगत नाम निर्गमन 3:15 में रखा है: ''यहोवा [YHWH], ... सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।'' यह तो पता नहीं कि परमेश्वर ने चार अक्षरों ''YHWH'' (यहवह) का उच्चारण कैसे किया (तकनीकी रूप से इसे ''Tetragrammaton'' अर्थात चतुरवर्णीय कहा जाता है), परन्तु उनके अर्थ की पूरी समझ आती है।

यदि इसका उच्चारण ''याहवेह'' था, तो इसका अर्थ है ''वह होने का कारण बनता है'' जोकि परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति का ऐलान है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह ऐसा है! हम जीवित होने के लिए आनन्द करते हैं और हम जानते हैं कि उसकी सृजनात्मक शक्ति के बिना हमारा अस्तित्व नहीं हो सकता था। ''अनादि परमेश्वर [हमारा] गृहधाम है, और नीचे सनातन भुजाएं हैं'' (व्यवस्थाविवरण 33:27)।

यदि इन चार अक्षरों का उच्चारण ''याहवेह'' था, तो इसका अर्थ है ''वह रहेगा'' जो कि अपने आप में होने और अपने आप पर निर्भर होने की उसकी असीमितता की घोषणा है। ''मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं'' (यशायाह 44:6); ''अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है'' (भजन संहिता 90:2)। अपनी सीमित समझ से हम इस बात को समझा नहीं सकते कि वह अस्तित्व में कैसे आया (इब्रानियों 11:6), परन्तु हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि वह था, है, और रहेगा! अपने समाप्त न होने की हमारी आशा उसी के कारण ही है। यदि उसका अस्तित्व बना रहता है और वह हमसे प्रेम करता है, तो यह आशा है कि हम भी सदा तक रहेंगे। ''इसलिए कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे'' (यूहन्ना 14:19)।

बाइबल के अनुसार, मनुष्यों में हव्वा ने कैन के जन्म के समय सबसे पहले परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम पुकारकर कहा था, ''मैंने यहोवा [YHWH] की सहायता से एक पुरुष

पाया है'' (उत्पत्ति 4:1)। उसके पोते एनोश ने YHWH का नाम पुकारा था (उत्पत्ति 4:26)। इब्राहीम, इसहाक, याकूब और अन्यों ने ''YHWH'' का नाम बुलाया था (उत्पत्ति 14:22; 15:2; 24:27; 26:28; 27:27; 28:16; 30:24; 31:49), परन्तु इनमें से किसी को भी ''YHWH'' के चार अक्षरों में पाए जाने वाले महान अर्थ का ज्ञान नहीं था (देखिए निर्गमन 6:3)। मूसा पहला मनुष्य था जिस पर टैट्राग्रेमेटन के महत्व अर्थात ''मैं जो हूं सो हूं'' या ''मैं हूं क्योंकि मैं हूं'' को स्पष्ट किया गया (निर्गमन 3:14)। पत्थर पर अपने हाथ से लिखते समय परमेश्वर ने इस पवित्र नाम का भय रखने का परामर्श दिया था, ''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा'' (निर्गमन 20:7)।

इस ''नाम'' की निन्दा करने वाले एक व्यक्ति (लैव्यव्यवस्था 24:11, 16) को पत्थर मार मारकर मार दिया गया था। इस घटना से यह अंधविश्वास पैदा हो गया था कि ''वह नाम'' इतना पवित्र है कि उसे मुनष्यों के होंठों पर नहीं लाया जाना चाहिए। परन्तु परमेश्वर ने अपना नाम न पुकारने के लिए नहीं कहा था; उसने तो केवल यही कहा था कि इसे पवित्र माना जाए। यद्यपि इब्रानियों को पवित्र शास्त्र में ''YHWH'' नाम पर आने पर इसके विकल्प के रूप में ''प्रभु'' शब्द की आदत पड़ गई थी। परिणामस्वरूप उचित उच्चारण जिसे पहले सब लोग जानते थे मनुष्य के शब्दकोश से मिट गया। अब किसी को मालूम नहीं कि मूल रूप में परमेश्वर ने मूसा को कहे चार अक्षरों का उच्चारण कैसे किया था।

अपने पुत्र को संसार में भेजते हुए पिता को यह अच्छा लगा कि सब मनुष्य ''जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे पुत्र का भी आदर करें'' और ऐसा न करने का अर्थ पिता का अपमान करना था (यूहन्ना 5:23)। जिस कारण, अब नये नियम में हर बात ''प्रभु यीशु के नाम से'' की जानी आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:17)। पिता को यह अच्छा लगा कि मसीही युग में ''YHWH'' के स्थान पर यीशु का नाम हो, जो ''सब नामों में श्रेष्ठ है'' (फिलिप्पियों 2:9)।

इस नये युग के पहले ही दिन, आत्मा की प्रेरणा प्राप्त पतरस ने मन फिराने और बपतिस्मे की आज्ञा, YHWH के अधिकार से नहीं बल्कि ''यीशु मसीह के नाम'' से दी थी (प्रेरितों 2:38)। सामरिया में फिलिप्पुस ने YHWH के नाम से नहीं बल्कि ''यीशु के नाम'' से प्रचार किया था (प्रेरितों 8:12)। सचमुच, मनुष्यों में ''कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)।

परमेश्वर के नाम के रूप में ''YHWH'' के चार अक्षरों के लिप्यांतरण से पहले इब्रानी भाषा के विद्वान इसे ''JHVH'' लिखते थे। वर्षों तक इस शब्द के उच्चारण से बचने के लिए ''प्रभु'' शब्द का इस्तेमाल होता रहा। उस दौरान सन 1518 में पेटरस गलिटिनुस के मन में शब्दों के मिलान का विचार आया था। उसने ''प्रभु'' के लिए इब्रानी शब्द से स्वर लेकर उन्हें ''JHVH'' अक्षरों में डाल दिया। चार अक्षरों में ''e,'' ''o,'' और ''a'' डालने से सबसे पहली बार ''Jehovah'' शब्द लिखा गया था। आज बहुत से भले लोग यह नहीं समझते कि ''Jehovah'' शब्द बाइबल का नहीं है। यह मानव निर्मित दो नसला शब्द है जिसके बारे में 1518 ईस्वी. से पहले कोई नहीं जानता था।[1]

1931 में ''इंटरनेशनल बाइबल स्टूडेंट्स'' नामक एक अतिउत्साही, भ्रमित सम्प्रदाय ने (कोलम्बुस, ओहियो में एक सभा में) अपना नाम बदलकर ''Jehovah's Witnesses'' रख लिया। उन्हें यह पता नहीं था कि वे बाइबल से बाहर का शब्द लगा रहे हैं, परन्तु वे ''Jehovah'' नाम के प्रति किसी भी और नाम से बढ़कर श्रद्धा रखने लगे। उन्होंने यीशु से बढ़कर जहोवा नाम को महिमा देनी चाही। यद्यपि ''YHWH'' शब्द जिससे ''Jehovah'' लिया गया था, पुराने नियम में लगभग 6823 बार मिलता है, परन्तु नये नियम में यह शब्द एक बार भी नहीं मिलता। क्योंकि जहोवा'ज़ विटनेसस पूरी बाइबल में चलने का दावा करते हैं, इसलिए वे इस बात से घबरा गए कि नये नियम के किसी लेखक द्वारा ''जहोवा'' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया था। इस घबराहट से उन्हें उनकी अपनी बाइबल अनुवाद करके राहत मिली जिसमें उन्होंने नये नियम के अपने अनुवाद में 237 बार ''जहोवा'' नाम निर्लज्जता से डाल दिया।

परमेश्वर को जो यह चाहता है कि मसीही युग में सब लोग उसके पुत्र को महिमा दें, ऐसे कपट से प्रसन्न नहीं किया जा सकता। उसने नया नियम जैसे चाहा था वैसे लिख कर दे दिया था, जिसमें उसने सब बातों में अपने पुत्र को प्रमुखता दी है (कुलुस्सियों 1:18)। परमेश्वर आज सब लोगों से चाहता है कि वे अपने आपको ''मसीही'' कहलाकर मसीह के नाम को महिमा दें (1 पतरस 4:16)। ''मसीह'' कहे बिना ''मसीही'' नहीं कहा जा सकता। अब सब लोगों के लिए आज्ञा है कि वे ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद'' करें (इफिसियों 5:20)।

पाद टिप्पणी

[1]ए. बी. डेविडसन, *द थियोलॉजी ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामेन्ट* (न्यूयॉर्क: स्क्रिब्नर, 1926), 47. पेटरस गलिटिनुस लियो X एक कन्फैसर था।